प्राक्कथन

शासन द्वारा समय पर बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिये कई योजनाओं को संचालित किया गया। सन् 2002 में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा '' सर्व शिक्षा अभियान '' के अंतर्गत बालिकाओं के लिये विशेश व्यवस्था युक्त शाला संचालित किया गया, इसी प्रकार आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग द्वारा संचालित योजना भी बालिकाओं के उन्नमुखीकरण पर ध्यान केन्द्रित करता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में बालिकाओं की शैक्षिणक स्थिति का शासकीय योजनाओं के संदर्भ में समीक्षात्मक अध्ययन (बस्तर छ0ग0 के संदर्भ में) इन्ही शासकीय योजनाओं के सार्थकता के अध्ययन हेतु किया गया है।

औपचारिकता या धन्यवाद के माध्यम से इस शोध प्रबंध की प्ररेणा तथा पूर्णता के लिये सहायक महानुभवों का ऑकलन नहीं किया जा सकता है, तथापि इन सभी के प्रति मैं अपनी लेखनी के माध्यम से आभार व्यक्त करना चाहती हूँ।

मैं कुलपति प्रो. बी.जॉन एवं पूर्व रजिस्ट्रार श्री ए. के. शुक्ला, वर्तमान रजिस्ट्रार श्री गोकुलानंदा पडा एवं प्रो. परविंदर हंसपाल, निदेशक शिक्षा, मैट्स विश्वविद्यालय, गुल्लू, आरंग, रायपुर (छ.ग.) भारत की अत्यंत आभारी हूँ, जिन्होंने इस विषय पर शोध करने की अनुमति प्रदान करते हुए इस कार्य को पूर्ण करने में मेरा पथ प्रदर्शन एवं उत्साहवर्धन किया।

आदरणीया श्रीमती डॉ0 सौम्या नैयर, उप प्राचार्य प्रगति कॉलेज रायपुर की आभारी हूँ, जिनके प्ररेणा तथा आत्मीय मार्गदर्शन में प्रस्तुत शोध की पूर्णता का मार्ग प्रशस्त हुआ ।

महाविद्यालय की प्रबुद्ध प्रध्यापिका डॉ0 परविंदर हंसपाल के सतत् सहयोग के लिये भी मैं आभारी हूँ। इस महाविद्यालय के समस्त आचार्यवृंद के प्रति हदय से आभारी हूँ। जिनके प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, बहुमूल्य सुझाव ने संबंधित शोध अध्ययन के लिये मेरा उत्साह वर्धन किया ।

इस शोध पबंध के विषय साम्रगी हेतु आभार व्यक्त करती हूँ। श्री अजय शर्मा, बी.आर.पी. श्री मनोज शर्मा तथा श्री हरेन्द जोशी, ए.पी.सी. तथा अश्विनी रॉय जिनका अर्वणनीय सहयोग मिला। मैं श्री डी. समैया , जिला शिक्षा अधिकारी बस्तर , श्री देवेश प्रसाद आदिम जाति तथा अनुसूचित जन जाति विभाग को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

अंत में मैं डॉ0 श्री के.के.झा जी, पिता स्व. श्री काशीनाथ सामंत तथा माता श्रीमती कमलवासिनी सामंत जिन्होनें हमेशा यही दोहराया कि मेरा लक्ष्य तो लेखन ही है तथा प्रतिक्षण अपनी वाणी अपनी लेखनी के माध्यम से मुझे इस विषय के प्रति सर्मपण भाव उत्पन्न किया मैं उनको चरण वंदना के साथ आभार व्यक्त करती हूँ और अपनी सासू मॉ श्रीमती उर्मिला झा, भाई श्री संदीप सांमत, बहन श्रीमती सरला रथ , श्रीमती सुचित्रा सामंत सिंह को धन्यवाद करती हूँ। जिन्होनें मुझे सतत् अध्ययन के लिये प्रेरित किया।

इस शोध प्रबंध को प्रारंभ करने का श्रेय मेरे पति श्री राजेन्द्र झा को देती हूँ तथा पूर्ण करने का श्रेय मैं अपने पत्र ऋषभ झा (गूंजन) को देती हूँ, क्योंकि मेरे पति मेरे गुरू बने और मेरा पुत्र मेरा मित्र, तभी यह शोध प्रबंध पूर्ण हुआ।

शोध प्रबंध को संपूर्ण धैर्य के साथ टंकण तथा संकलन करने का कार्य कु. भारती यादव, बी.आर.सी. कार्यालय जगदलपुर द्वारा किया गया आभार।

यह संपूर्ण शोध प्रबंध मेरे मार्गदर्शक डॉ0 सौम्या नैयर तथा सहयोगी डॉ0 परविंदर हंसपाल के प्रेरणा का प्रतिफल है।

दिनॉक / /

शोधकर्ता

श्रीमती सुषमा झा,
मैट्स विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)